गाँधी हत्या का वास्तव

शोध पत्र-राज्यशास्त्र

* प्रा. डॉ. सर्जेराव शिंदे

महात्मा जांधी २० वीं शताब्दी में मूलभूत, वैश्विज और व्यवहारिज विचार दे-ने वाले एज ृतिशिल विद्वा-न जा-ने जाते है। उ-होंने जेवल भारत जो राजजीय आजादी -हीं दी । बल्जि उ-होंने सारे विश्वसमुदाय में रह-ने वाले मा-नव समाज जो म-नोवैज्ञानिज, सामाजिज और आर्थिज जुलामी से मुक्ति जा तत्वज्ञा-न दिया है । उ-होंने 'सत्य और अहिंसा' जे आधार पर 'सत्याजह' जा मार्ज स्वीजार जर भारतीय स्वतंत्रता आंदोल-न जो -ई दिशा दी । उ-होंने सत्याज्रह जे रुप में एज तरफ युध्द तथा हिंसा जो पर्याय दिया और दूसरी तरफ जेवल भारत जे -हीं तो सम्पूर्ज विश्व जे शोषित, पिछड़े, जुलामी, दु:जी और असहाय लोजों जे हाथ में अ-याय जे जिलाफ उठा-ने जे तेज शस्त्र दिये। महात्मा जी जे इस जीव-न और जार्य जी वजह से आई-स्टाई-न जहता है, "और जुछ वर्षो बाद इस धरती पर जांधी -नाम जा जोई मा-नव हुआ था, इस बात पर लोजों जा विश्वास -हीं बैठेजा।" "जांधी जे अहिंसा मार्ज जे सिध्दांत जा अ-नुजरज जरजे ज-नशक्ति जड़ी जी जाए तो सामरिज ताजते -निष्क्रिय हो जायेजी।" बोरिस येल्स-न जे इस वाक्य से जांधी जी जे विचारों जा बढ़प्प-न और भी सिध्द होता है । ऐसे महात्मा पर अब तज देश और विदेश जे अ-नेज विद्वा-नों -ने विस्तृत लेज-न जिया है । पर-तु इ-न लेजों में एज विचार छुट जया है । जि-तु विस्तृत रुप से अधोलिजित -हीं हुआ है और वह विचार है, "जांधी जी जी हत्या जि-न जारजों से जी जई ।"

जांधी जी जी हत्या से जि-नजे हाथ लहुलुहा-न हो चुजे हैं । ऐसे अपराधी और हत्या जा पज ले-ने वाले, जभी जांधी विभाज-न जे जिम्मेदार थे। इसलिए उ-नजी हत्या हुई ऐसा जहते है । तो जभी जांधी जी जी वजह से पाजिस्ता-न जो ५५ जरोड़ रुपये दे-ने पड़े इसलिए उ-नजी हत्या हुई, ऐसा जहते है । जि-तु जांधी जी हत्या इ-न दो-नों ही जारजों जे बजाये जुछ मूलभूत स्वरुप जे जारजों से जी जई है । पर-तु वर्तमा-न जे जुछ -नासमझ अज्ञा-नतावश जांधीजी जे बारे में प्रतिजूल चर्चा जोरशोर से जरते रहे है । इसलिए जांधीजी जी हत्या जि-न जारजों से हुई है । इस बात जी वस्तुस्थिति आज जे समाज जो बता-ने जी जरुरत है । इसलिए १९३४ से १९४६ तज घटित घट-नाओं जा आधार लेजर बता-ने जा प्रयास प्रस्तुत पेपर में जिया है। महात्मा जांधी जे प्रति जाफी योज-नाबध्द तरीजे से घृजा -निर्माज जी जा रही है। जांधी विषयज घृजा जा जहर एजएज -निर्माज -हीं हुआ । -नई पीढ़ी जा उस इतिहास जे प्रति अज्ञा-न और पुरा-नी पीढी जी विस्मृति जे जारज उ-हें भी देश जा विभाज-न, पचप-न जरोड़ जा प्रजरज और मुस्लमा-नों जे प्रति अ-नु-नय यह जांधी हत्या जी वजहे ऐसा लजता है । जॉंग्रेसज-न जांधी जे -नाम जा इस्तमाल जेवल सत्ता प्राप्ति जी जातिर जरते है । जांधी जे अपप्रचार से उ-हे जोई ले-ना-दे-ना -हीं था । इसजी उ-हे जोई परवाह भी -हीं थी । जॉंग्रेसज-नों जो पिछले साठ सालों से जांधी जे प्रति सत्य दु-निया जे साम-ने लाए ऐसा जभी -हीं लजा । ३० ज-नवरी उन्नीस सौ अडतालीस इस दि-न जा सुरज भारत जा सभी प्रजाश अप-ने साथ लेजर डुब जया । वह संध्या अजर -न आती तो भारत जे राज-नीति जो -नया मोड मिलता । ३० ज-नवरी जी वह संध्या जी भयंजर घट-ना क्या टाली -हीं जा सजती थी ? वह घट-ना टल-नी सम्भव -हीं थी ? या घट-ना जे संदर्भ में सरजार जो जुछ जा-नजारी -हीं थी ? जांधी हत्या जे षड़यंत्र जी जा-नजारी सरदार पटेल जो हत्या जे १५ दि-न पहले ही मिली थी । ऐसा जुद पटेल -ने प्रा-नत जे जृहमंत्री मुरारजी देसाई जो जहा था, और इस घट-ना से पहले ही २० ज-नवरी १९४८ जो जांधी जे प्रार्थ-ना सभा में बम्ब विस्फोट हुआ था ।

बम्ब विस्फोट जर-ने वाले मद-नलाल पाहवा जो पुलिस -ने पजडा था और उससे जांधी हत्या जे षड़यंत्र में सहभाजी औरों जे भी -नाम और पते मिले थे । लेजि-न पुलिस उ-हे पजड़ -न सजी । जृहमंत्रालय जी पुलिस -ने तुर-त जार्यवाही जि होती तो महात्मा जांधी जी ३० ज-नवरी जे दि-न हत्या -न होती । सवाल यह उठता है, क्या जांधी जे हत्या जे लिए जेवल -नथुराम जोडसे और उसजे साथी जिम्मेदार है ? या फिर इसजे लिए जोई और साथी भी जिम्मेदार हो सजता है ? या जांधी जे हत्या जे पिछे दूसरा जारज था? या फिर जिसी विचारप्रजाली जा हिस्सा था ? जुछ तथाजथित यह घट-ना देश जा विभाज-न, पाजिस्ता-न जो दिये जये पचप-न जरोड़ रुपये और जांधी जा मुस्लमा-नों जे प्रति लजाव ऐसे जुछ जारज आजे जरजे हत्या जा समर्थ-न जरते है । पर-तु हत्या जे समर्थ-न में दिए जए यह जारज तजलादू है ।

विभाज-न जी वास्तविजता :- भारत जे विभाज-न जी जड़े जिस तरह ब्रिटिशों जे "Divide and Rule" -नीति में हैं । उसी तरह मुस्लिम और हि-दू महासभा जे धर्म और एज दूसरे जे प्रति तिरस्जृत राज-नीति एवं जॉंग्रेस -नेताजजों -ने अहंजार और जैरजिम्मेदार जिये जये विधा-नों में है। उस जारज विभाज-न जे पाप जा घड़ा जिसी एज व्यक्ति जे मत्थे पर फोड़-ना ईमा-नदारी -हीं होजी । क्योंजि जांधी विभाज-न जे विरोध में थे । इसलिए जांधी -ने वायसराय जे समज -नौ जलमी योज-ना सादर जी । लेजि-न जिन्ना -ने उसे -हीं मा-ना । जांधी -ने विभाज-न टाल-ने जे लिए 'राजाजी योज-ना' जो मा-न्यता दी । लेजि-न जिन्ना इस योज-ना से भी असहमत थे । इस जारज जांधी -ने 'राजाजी योज-ना' जा समर्थ-न जिया । इसलिए विभाज-न हुआ । यह दावा भी -निराधार है । क्योंजि जांधी जी -नौ जलमी योज-ना और राजाजी योज-ना जे जारज विभाज-न होता तो जिन्ना उसे साफ-साफ इ-नजार -हीं जरते । इ-न दो-नों घट-नाओं से जांधी जो विभाज-न मंजूर -हीं था। यही सिध्द होता है। विभाज-न जो जांधी जा विरोध था। इसलिए जांधी जिन्ना जो "सम्पूर्ज भारत यह पाजिस्ता-न है ऐसा समझजर शास-न जरों और तुम प्रधा-नमंत्री ब-न जाओ । पुरी मंत्री परिषद ही मुस्लिम लिज जो लेजर ब-नाओ । लेजि-न पाजिस्ता-न जी मांज छोड़ दो ।" ऐसे ही जांधी जिन्ना जो म-नाते रहे । जांधी, सरहद जांधी-

*राज्यशास्त्र विभाग, संभाजी महाविद्यालय, मुरुड़, लातूर

जा-ा अब्दुल जफार जा-ा, जय प्रज़ाश -ाारायज और डॉ. रामम-ाोहर लोहिया ज़ेवल इ-ा चारों -ो ही ज़ाँग्रेस ज़ार्य समिति ज़ी बैठज़ में विभाज-ा ज़ा विरोध ज़िया । बाज़ि ज़िसी -ो भी विभाज-ा ज़े विरोध में एज़ शब्द भी -ाहीं ज़हा । इस तरह ज़ा वृता-ात "जिल्टी मै-ा ऑफ पार्टीश-ा" इस ज़िताब में दिया है। हंजामी शास-ा ज़े ज़ालजंड में लियाज़त अली वित्तमंत्री थे । उ-ाहो-ों उस वक्त ज़ाँग्रेस ज़े साम-ो ज़ाफी समस्याएं जडी ज़ी थी । उस ज़ारज सरदार पटेल भलि-भांति संज़ट मे आये थे । वित्तमंत्री ज़े -ााते लियाज़त अली ज़ा जो अ-ाुभव पटेल ज़ो आया । उसज़ा जुस्सा रजज़र मुस्लिम लिज ज़े साथ हमें ज़ाम ज़रज़े -ाहीं आयेजा । ऐसा पटेल जी ज़ो लज रहा था । इसलिए विभाज-ा ही पर्याय है । ऐसा मा-ाज़र सबसे पहले पटेल -ो ही विभाज-ा ज़ो मा-ायता दे दी । उसज़े बाद लॉर्ड मांउट बैट-ा -ो -ोहरु ज़े पास विभाज-ा ज़ी योज-ाा रजते हुए उ-ाहो-ो -ोहरु से ज़हा ज़ि विभाज-ा ज़ो मा-ायता पटेलजी -ो दी है । तब -ोहरु -ो भी विभाज-ा ज़ा विरोध छोड़ज़र उसे मा-ायता दे दी । "इंडिया वि-ास फ्रिडम" में लोहिया जैसे आजाद -ो भी पटेल--ोहरु ज़ो विभाज-ा ज़े लिए जिम्मेदार ठहराया है। लोहिया जैसे आजाद -ो भी पटेल--ोहरु ज़ो विभाज-ा ज़े लिए जिम्मेदार ठहराया है। हि-ादू -मुस्लिम एज़ता में ब्रिटिश साम्राज्य ज़ो जतरा है। इसलिए "Divide and Rule" -ाीति ज़ा अवलंब ज़रज़े जॉर्ज डफरी-ा -ो ज़ाँग्रेस सदस्य संज्या ज़े आधार पर भारत में "हि-ादू और मुस्लमा-ा ऐसे दो राष्ट्र है । ऐसे द्विराष्ट्रवाद ज़े बीज बोये ।

बंजाल ज़ा विभाज-ा, विभक्त मतदार संघ ज़ी निर्मिती ज़े ज़ारज से भारत ज़े विभाज-ा ज़ा अंज़ुर बढ-ो ज़े प्रोत्साह-ा मिला । १९४० तज़ जिन्ना अजज़्ड भारत ज़े समर्थज़ थे । ज़ि-ातु भारतीयों ज़ा -ोतृत्व ज़र-ो ज़ी जिन्ना ज़ी महत्वज़ांजा और ज़ाँग्रेस -ोताज-ाों ज़े जैर जिम्मेदार टिप्पजी, इस ज़ारज जिन्ना और ज़ाँग्रेस ज़े संबंध बिजड़ते जये । इसलिए विभाज-ा ज़ी जिम्मेदारी ज़िसी एज़ -ोता पर -ाहीं आ सज़ती । जांधी -ो विभाज-ा ज़ो टाल-ो ज़ी पूरी ज़ोशिश ज़ी । जांधी ज़ी विभाज-ो विरोधी भूमिज़ा ज़ी साफ दिल से जा-ाज़ारी ली तो ज़ोई भी समझादार इंसा-ा विभाज-ा ज़े लिए जांधी ज़ो जिम्मेदार -ाहीं ठहरा सज़ता ।

.५५ ज़रोड़ रुपयों ज़ा प्रज़रज :- ज़ेवल जांधी ज़े आज्रह ज़े ज़ारज और जांधी द्वारा ज़िए जए अ-ाश-ा ज़े ज़ारज पाज़िस्ता-ा ज़ो ५५ ज़रोड़ रुपयें दे-ो पड़े । इसी असंतोष से जांधी ज़ी हत्या ज़ी जई ऐसा प्रचार ज़िया जाता है लेज़ि-ा यह जलत है । संयुक्त परिवार विभक्त होते समय पुस्तै-ाी जायदाद दो भाईयों में बांटी जाती है । ऐसी यह बात थी । विभाज-ा ज़े वक्त भारत ज़ी तिजौरी में ३७५ ज़रोड़ रुपये थे।जिसमें से ७५ ज़रोड़ पाज़िस्ता-ा ज़े हिस्से में आये थे। इ-ामे से २० ज़रोड पाज़िस्ता-ा ज़ो पहले ही दे दिये जये थे । दिसम्बर १९४७ ज़े हुए भारत-पाज़ ज़रार मे लिजित रुप से पाज़िस्ता-ा ज़ो शेष ५५ ज़रोड़ रुपये दे-ो पर भारत ज़ी और से मा-ायता दी जई थी। ज़ि-ातु इसी ज़ालजंड में पाज़िस्ता-ा -ो टोलियों ज़ी मदद से ज़श्मीर पर सैनिज़ हमला ज़िया। तब ज़श्मीर ज़ी समस्या जब-तज़ हल -ाहीं ज़ि जाती तब-तज़ ५५ ज़रोड़ रुपये -ाहीं देजें ऐसी भुमिज़ा पटेल ज़े आज्रह ज़े ज़ारज भारत सरज़ार -ो ली । जांधी ज़ो अंधेरे में रजज़र देश ज़ा इत-ाा बड़ा प्रदेश छोड़ दे-ो ज़े लिए जो लोज तैयार थे उ-ाहो-ों ५५ ज़रोड़ रुपये ज़े जातिर ऐसी भूमिज़ा अप-ाा ले-ाा ठीज़ -ाहीं था । विभाज-ा ज़ी तुल-ाा में ५५ ज़रोड़ ज़ोई बडी बात -ाही थी । इसज़े अलावा सभी समस्यांए हल हो जा-ो ज़े बाद ५५ ज़रोड़ रुपये दिये जायेजें ऐसी ज़ोई भी शर्त ज़रार में -ाहीं थी और विशेष यह था ज़ि स्वतंत्रता ज़े बाद भारत ज़ा यह पहला अ-ातराष्ट्रीय ज़रार था । अजर इस ज़रार ज़ा पाल-ा भारत ज़ी और से -ाही ज़िया जया तो अ-ातर्राष्ट्रीय जजत में भारत ज़ी बद-ाामी हो सज़ती थी ।

यह -ौतिज़ता ज़े दृष्टिज़ोज और अ-ातर्राष्ट्रीय ज़ा-ाू-ा ज़े मुताबिज़ योज्य -ाहीं था । इसलिए ५५ ज़रोड़ दिये जाये ऐसी भूमिज़ा जांधी -ो रजी । १३ ज-ावरी १९४८ ज़ो जांधी -ो जो अ-ाश-ा ज़िया था वो पाज़िस्ता-ा ज़ो ५५ ज़रोड दिये जाये । इस आज्रह ज़े लिए ज़िया -ाही था । वह दिल्ली में हो रहे दंजों में शांतता ला-ो ज़े लिए ज़िया जया था । इस अ-ाश-ा ज़े बारे में डॉ. राजे-ाद्र प्रसाद ज़ी अध्यजता में सर्वधर्मीय १३० लोजों ज़ी शांतता समिति नियुक्त ज़ी जई थी । इस समिति -ो १७ ज-ावरी ज़ो जांधी अ-ाश-ा छोड-ो ज़ी शर्तो ज़ो मा-ायता दे दी । तब १८ ज-ावरी ज़ो जांधी जी -ो अ-ाश-ा छोडा । इ-ा शर्तो में पाज़िस्ता-ा ज़ो ५५ ज़रोड दिये जायें ऐसी ज़ोई भी शर्त -ाहीं थी । इससे यह स्पष्ट होता है ज़ि ५५ ज़रोड ज़ा प्रज़रज और जांधी ज़ा ज़ोई संबंध -ाहीं था । जांधी हत्या ज़े बताये जा-ो वाले ज़ारज उपरोक्त विवेच-ा से सही -ाही ठहरा सज़ते । बल्ज़ि झुठी साबित होती है । फिर आजे सवाल उठता है ज़ि जांधी ज़ी हत्या क्यों हुई ? तिलज़ ज़े -ोतृत्व वाले आ-ादोल-ा से मिल-ो वाले स्वराज्य में अप-ाी राजज़ीय सत्ता और सामाजिज़ नियत्रंज ज़ो धक्ज़ा -ाहीं लजेजा । यह उच्च वर्जीयों ज़ा स्वप्-ा जांधी ज़े -ोतृत्व ज़े ज़ारज मिट्टी में मिल जाएजा । ऐसा भय उ-ाहे लज-ो लजा था । क्योंज़ि जांधी -ो अप-ो विचार और तत्व-ज्ञा-ा ज़े माध्यम से देश ज़ी राज-ाीति ज़ो -ाई दिशा दी । अंहिसा, सत्याज्रह, असहज़ार जैसे संघर्ष ज़े -ाये हथियार ब-ााऐ । देश ज़े सभी जाति और ज-ाजातियों ज़ो इस आ-ादोल-ा में शामिल ज़र लिया । इस ज़ारज स्वराज्य अजर मिल भी जाए तो सत्ता अप-ो हाथों में -ाहीं आयेजी । ऐसा उच्च जाति ज़े लोजों ज़ो लज-ो लजा था । धर्म और धर्मराष्ट्र इ-ा भाव-ााओं ज़े आधार पर भी लोज जांधी से अलज -ाहीं हो रहे थे । बल्ज़ि जांधी ज़ा प्रभाव और भी बढ़-ो लथा था । तब जांधी ज़ो -ाष्ट ज़िया जाए यह विचार इ-ा वर्जो में बढ़ता जया और जांधी ज़ो मार-ो ज़ी ज़ोशिशें शुरु हुई । अजर मा-ाा जाए ज़ि जांधी हत्या, विभाज-ा और ५५ ज़रोड़ रुपये ज़ी वजह से हुई है, तो शायद १९३४ से जांधी ज़ी हत्या ज़े प्रयास क्यों ज़िए जये । १९३४ ज़ा पुजे स्थित बम्ब हमला, जुलाई १९४४ ज़ा पांचजजी ज़ा प्रयास, अजस्त १९४४ ज़ी सेवा ज्राम ज़ी घट-ाा, जू-ा १९४६ ज़ा रेल दुर्घट-ाा, यह जांधी ज़ी हत्या ज़र-ो ज़े ज़िये जये प्रयास विभाज-ा और ५५ ज़रोड़ रुपये ज़े घट-ााओं ज़े पूर्व ज़ाल में हुए थे । जांधी हत्या ज़ी सूच-ाा १५ दि-ा पहले ही ज़े-ाद्रीय जृहमंत्री, पुलिस और प्रदेश ज़े जृहमंत्री इ-ा सभी ज़ो मिली थी । फिर भी जांधी हत्या रोज़-ो में सरज़ार ज़ो ज़ामयाबी क्यों -ाहीं मिली ? ऐसा सवाल जड़ा होता है । इसज़ी सच्चाई यह है ज़ि सरज़ार ज़ी -ााज़ामयाबी, जांधी विरोधज़ों ज़े साथ मेल-जोल, व्यक्तिजत द्वेष इ-ा सभी ज़ारजों ज़ी वजह से ही जांधी ज़ी हत्या हो जई । अतंत : जांधी ज़ी हत्या एज़ व्यक्ति समतामूलज़ समाज व्यवस्था निर्माज ज़े चाह-ो वालों ज़े विचारों ज़ी हत्या थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. जज-ा फडजीस - 'महात्म्याची अजेर' २. -ालि-ाी पज़्डित - 'जांधी' ३. आचार्य जावडेज़र - 'सत्याजृही समाज' ४. डॉ. -ााजोराव ज़ुंभार - 'विचार सलाज़' ५. जांधी - 'माझो सत्याचे प्रयोज'